

विजयराधरा द्वारा लिखी गई यह कविता अपने अपने शब्दों में एक अद्भुत विचार और अद्भुत व्यंग्य है। इसमें विजयराधरा का अपना विचार व्यंग्य और अपनी कल्पना का व्यंग्य सम्मिलित है।